4 देश के नाम संदेश

पत्र के माध्यम से हम दूर बसे संबंधियों, परिवारजनों तथा मित्रों को अपनी बात आसानी से पहुँचा सकते हैं एवं सरकारी दफ्तरों में अपनी शिकायतें और आवेदन पहुँचा सकते हैं। आजकल दूरभाष, मोबाइल, तार, ई-मेल आदि से भी यह कार्य किया जाता है, फिर भी पत्र का अपना विशेष महत्त्व है।

हमारे पूर्व राष्ट्रपति एवं 'मिसाइलमेन' डॉ. अबुल पकीर जैनुलाब्दीन अब्दुल कलाम ने नई दिल्ली से 19 मई 2005 के दिन 'क्या आपके पास देश के लिए दस मिनट है?' नाम से देश के नागरिकों को ई-मेल किया था। इसमें देशवासियों के मन में देशाभिमान की भावना उत्पन्न हो, ऐसी सीख भी है।

मातृछाया, ऊँची शेरी,
गाँव - मेसपुरा,
तहसील - भाभर,
जिला - बनासकांठा,
दिनांक - 24-12-2011

प्रिय मित्र हर्ष,

नमस्ते।

मैं यहाँ सकुशल हूँ। आशा है वहाँ सभी सकुशल होंगे।

तुम्हारा खत मिला, पढ़कर खुशी हुई। मैंने डॉ. अब्दुल कलाम का देशवासियों के नाम भेजा गया एक ई-मेल पढ़ा, वही तुम्हारे लिए प्रेषित कर रहा हूँ।

''डॉ. कलाम अपने संदेश की शुरुआत में ही पूछते हैं, क्या आपके पास अपने देश के लिए दस मिनट का समय है? यदि हाँ, तो इसे पढ़िए वरना मरज़ी आपकी। (इसके बाद वह देश के लोगों की सोच बताते हुए कहते हैं -

- आप कहते हैं - हमारी सरकार निकम्मी है।
- आप कहते हैं - हमारे कानून पुराने पड़ गए।
- आप कहते हैं - नगरपालिका कचरा नहीं उठाती।
- आप कहते हैं - फोन काम नहीं करता, रेलवे मजाक बन गई है, एयरलाइन दुनिया में हमारी ही सबसे खराब है, चिट्ठी अपनी मंजिल तक नहीं पहुँचती।

– आप कहते हैं, कहते रहते हैं और कहते ही रहते हैं। आपने इस बारे में क्या किया।

फिर राष्ट्रपति ने कहा : मान लीजिए एक व्यक्ति सिंगापुर जा रहा है। उसे अपना नाम दीजिए उसे अपनी शक्ल भी दे दीजिए।

– आप दुनिया के सर्वश्रेष्ठ हवाई अड्डे पर उतरते हैं, सिंगापुर में आप अपनी सिगरेट का टुकडा सड़कों पर नहीं फेंकते और स्टोर में खाते भी नहीं हैं।
– आपको उनके भूमिगत संपर्कों पर रश्क महसूस होता है।
– आप शाम पाँच से आठ बजे के बीच आचर्ड रोड पर कार चलाने का टॉलटैक्स तकरीबन साठ रुपए भुगतान करते हैं।
– अगर पार्किंग में आपने निर्धारित समय से ज्यादा गाड़ी खड़ी की तो टिकट पंच कराते हैं, लेकिन आप सिंगापुर में कहते कुछ नहीं, कहते हैं क्या?
– दुबई में आप रमज़ान के दिनों में सार्वजनिक रूप से कुछ भी खाने का साहस नहीं करते। जेहाद में बिना सिर ढ़के बाहर नहीं निकलते।
– वॉशिंगटन में आप 55 मील प्रति घंटा से ऊपर गाड़ी चलाने की हिमाकत नहीं करते और पलटकर सिपाही से यह भी नहीं कहते कि जानता है मैं कौन हूँ? मैं फलाँ हूँ और फलाँ मेरा बाप है।
– ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड के समुद्र तटों पर आप खाली नारियल हवा में नहीं उछालते।
– टोकियो में आप सड़कों पर पान की पीक क्यों नहीं थूकते।
– बोस्टन में आप जाली योग्यता प्रमाणपत्र क्यों नहीं खरीदते।

(डॉ. कलाम बीच में याद दिलाते हैं–) मैं आप ही के बारे में बात कर रहा हूँ, सिर्फ आपके।

डॉ. कलाम कहते हैं : आप दूसरे देशों की व्यवस्था का आदर और पालन कर सकते हैं, लेकिन अपनी व्यवस्था का नहीं। भारतीय धरती पर कदम रखते ही आप सिगरेट का टुकड़ा जहाँ–तहाँ फेंकते हैं। कागज़ के पुर्जे उछालते हैं। यदि आप पराए देश में प्रशंसनीय नागरिक हो सकते हैं, तो यहाँ भारत में आप ऐसा क्यों नहीं बन सकते।

डॉ. कलाम ने मुम्बई के पूर्व महा नगरपालिका आयुक्त तिनायकर के हवाले से कहा : अमीर लोग अपने कुत्तों को सड़कों पर घुमाने निकलते हैं और जहाँ–तहाँ गंदगी बिखेर कर आ जाते हैं और फिर वही लोग सड़कों पर गंदगी के लिए प्रशासन पर दोष मढ़ते हैं।

क्या वे उम्मीद करते हैं कि वे जब भी बाहर निकलेंगे तो एक अधिकारी झाड़ू लेकर उनके पीछे–पीछे चलेगा और जब उनके कुत्ते को हाजत लगेगी तो वह एक कटोरा उसके पीछे लगाएगा।

राष्ट्रपति ने मिसाल दी कि अमेरिका और जापान में कुत्ते के मालिक को उसकी छोड़ी हुई गंदगी साफ़ करनी पड़ती है। फिर शासन व्यवस्था के बारे में डॉ. कलाम ने कहा कि ''हम सरकार चुनने के लिए वोट डालने जाते हैं और अपनी सारी जिम्मेदारियाँ भी वहीं उलट आते हैं। हम आराम से बैठकर सोचते हैं कि अब हमारे नाज़-नखरे उठाए जाएँगे। हम सोचते हैं कि हमारा हर काम सरकार करेगी और हम फर्श पर पड़ा हुआ रद्दी कागज उठाकर उसे कूड़ेदान में डालने की ज़हमत तक नहीं उठाएँगे। रेलवे हमारे लिए साफ़-सुथरे बाथरूम देगी और हम उन्हें ठीक से इस्तेमाल करना भी नहीं सीखेंगे।'' डॉ. कलाम ने कहा कि : समाज की ज्वलंत समस्याओं पर भी हमारा ऐसा ही रवैया है। हम ड्रॉइंग रूम में बैठकर दहेज के खिलाफ गला फाड़ते हैं और अपने घर में इसका उलटा करते हैं। और बहाना देखिए-पूरी व्यवस्था ही खराब है। अगर मैं अपने बेटे कि शादी में दहेज नहीं लूँगा तो इससे कौन-सा बड़ा फर्क पड़ जाएगा।

राष्ट्रपति ने इस संदेश में पूछा - इस व्यवस्था को बदलेगा कौन? यह व्यवस्था है किसकी? आप आसानी से कह देंगे व्यवस्था में शामिल हैं हमारे पड़ौसी, आसपास के घर, अन्य शहर, अन्य समुदाय और सरकार। लेकिन मैं और आप कतई नहीं। जब कुछ अच्छा करने की हमारी बारी आती है, तो हम अपने परिवार को सुरक्षित कवच में घेर लेते हैं। दूसरे देशों की ओर निहारते हैं और इंतजार करते हैं कि कोई मिस्टर क्लिन आएगा, अपने जादुई हाथों से चमत्कार करेगा और ऐसा नहीं होता तो आप देश छोड़कर ही चल देंगे। उन्होंने कहा - हम अपने भय से भागकर अमेरिका जाएँगे। उनके गौरव का गुणगान करेंगे। व्यवस्था की प्रशंसा करेंगे और जब न्यूयॉर्क असुरक्षित हो जाएगा तो आप इंग्लैंड भाग जाएँगे। इग्लैंड में बेरोजगारी होगी तो खाड़ी चले जाएँगे और जब खाड़ी में युद्ध छिड़ जाएगा तो आप माँग करेंगे कि भारत सरकार हमें बचाकर घर ले जाए। हर कोई देश को गाली देने को तैयार है, पर व्यवस्था में सकारात्मक योगदान के बारे में नहीं सोचता। क्या हमने अपनी आत्मा को पैसे के हाथों गिरवी रख दिया है? डॉ. कलाम व्यवस्था में नागरिकों के सकारात्मक योगदान के लिए देशवासियों को झकझोर देते हैं। श्रेष्ठ नागरिक बनने की शुरुआत करने की अपील करते हुए संदेश में कहा गया है कि अगर आप वाकई संदेश से सहमत हैं तो इसे अपने दस और साथियों को ई-मेल से भेजिए।

परिवार के सभी बड़ों को मेरा प्रणाम।

तुम्हारा मित्र,

किरण।

शब्दार्थ

वाकई यथार्थ, हकीकत में **रश्क** ईर्ष्या **रवैया** परिपाटी **तकरीबन** प्राय:, लगभग **पुर्जे** टुकड़े **मिसाल** उदाहरण **हिमाकत** मूर्खता, बेवकूफी **झकझोरना** झटका देना, झंझोरना

अभ्यास

प्रश्न 1. प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए :

(1) यह पत्र किसने किसको लिखा है?

(2) पत्र लिखने वाले का पता क्या है?

(3) पत्र में क्या वर्णन किया है?

(4) पत्र के अंत में किरण ने हर्ष के परिवारजनों को क्या कहा है?

प्रश्न 2. प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए :

(1) हम दूसरे देशों में उनके कायदे-कानून का पालन करते हैं, लेकिन अपने देश में क्यों नहीं?

(2) हमारे देश की स्वच्छता की जिम्मेदारी किसकी है?

(3) हमारे देश के विकास में कौन-कौन सी समस्याएँ बाधक हैं?

(4) देश के प्रति हमारा क्या फ़र्ज़ है?

प्रश्न 3. शब्दो को उचित क्रम में रखकर अर्थपूर्ण वाक्य बनाइए :

(1) में - सफ़ाई - खुदाई - है।

....

(2) मेरा - महान - भारत।

....

(3) लेना - और - दहेज - पाप - देना - है।

....

(4) आदर्श - भारत को - आओ - बनाएँ - मिलकर - राष्ट्र।

....

प्रश्न 4. ऐसे व्यवहार की चर्चा कीजिए जिससे हम देश में अव्यवस्था खड़ी करते हैं एवं देश के विकास में बाधा डालते हैं।

प्रश्न 5. 'दहेज एक दूषण' इस विषय पर कारण सहित अपना मत दीजिए।

प्रश्न 6. हम स्वयं कैसे अपने कर्तव्य का पालन करके आदर्श नागरिक बन सकते हैं एवं भारत को आदर्श राष्ट्र बनाने में योगदान दे सकते हैं, इस विषय पर दिए गए प्रारूप के आधार पर अपने मित्र को पत्र लिखकर अपने विचार बताएँ।

....
....] 1. अपना पता
....

.... 2. दिनांक

.... 3. संबोधन

.... 4. अभिवादन

....

.... 5. पत्र लिखने का कारण

....

....

.... 6. पत्र का विषयवस्तु

....

....

....

....

....

.... 7. अन्य समाचार

....

....

.... 8. समाप्ति

....

....

.... 9. संबंध

.... 10. नाम

स्वाध्याय

प्रश्न 1. प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

(1) डॉ. कलाम ने इस ई-मेल से हमें क्या सीख दी है?

(2) दूसरे देशों में और अपने देश में हम जो व्यवहार करते हैं, उसमें क्या अंतर है ?

(3) दूसरे देशों में लोग स्वच्छता के प्रति कैसे जागरूक हैं?

(4) अपने देश की व्यवस्था को हम कैसे सुधार सकते हैं ?

प्रश्न 2. जीवन में सफ़ाई का महत्त्व समझाते हुए अपने मित्र को पत्र लिखिए।

प्रश्न 3. निम्नलिखित वाक्यों के काल पहचानिए :

(1) मैं क्रिकेट खेलता हूँ।

(2) मैं कल अंबाजी गया था।

(3) कोई गाना गा रहा है।

(4) आज ठंड ज्यादा होगी।

(5) कल हम स्कूल से प्रवास जा रहे हैं।

(6) परसों कश्मीर में हिम वर्षा हुई।

प्रश्न 4. काल परिवर्तन कीजिए :

(1) मैं बाजार गया। (भविष्यकाल)

(2) मंदिर में पूजा होगी। (भूतकाल)

(3) सिमला में हिम वर्षा हुई। (भविष्यकाल)

(4) मैंने पढ़ाई की। (वर्तमानकाल)

भाषा-सज्जता

- **पढ़िए और समझिए :**

(1) **एक म्यान में दो तलवार नहीं समा सकती :** एक वस्तु के दो समान अधिकारी नहीं हो सकते।

यदि दो महत्त्वाकांक्षी लीडर एक पार्टी में रहेंगे, तो सदा टकराव की स्थिति रहेगी क्योंकि एक म्यान में दो तलवार नहीं समा सकतीं।

(2) **खोदा पहाड़ निकला चूहा :** अधिक मेहनत, लाभ कम।

ज्यादा मुनाफ़े के लिए उसने बड़ी होटल बनाई थी। पर पूरे साल में उसको नाममात्र का ही मुनाफ़ा हुआ। इसी को कहते हैं – खोदा पहाड़ निकला चूहा।

(3) **जिसकी लाठी उसकी भैंस :** शक्तिशाली की ही जीत होती है।

सेठ जी ने अपने निर्दोष नौकर पर चोरी का इल्ज़ाम लगाकर उसे दो साल के लिए जेल भिजवा दिया। किसी ने ठीक ही कहा है – जिसकी लाठी उसकी भैंस।

उपर्युक्त अभ्यास के आधार पर निम्नलिखित कहावतों के अर्थ देकर वाक्य में समझाइए :

(1) चाँद पर थूका मुँह पर गिरा।

(2) छोटा मुँह बड़ी बात।

(3) दूर के ढोल सुहावने।
(4) दोनों हाथों में लड्डू।
(5) साँप भी मरे लाठी भी न टूटे।

योग्यता विस्तार

- डॉ. कलाम के 'अगनपंख', 'विज़न ट्वेन्टी-ट्वेन्टी' पुस्तकें पढ़िए।
- डॉ. कलाम के प्रेरक प्रसंग पढ़िए।
- बच्चों से हस्तलिखित पत्र, हस्तप्रत आदि एकत्रित करवाकर उसका पठन करवाइए एवं उसका महत्त्व समझाइए।
- किसी महापुरुष के हस्तलिखित पत्रों का छात्रों से पठन करवाइए एवं पत्र लिखने का महत्त्व एवं आशय स्पष्ट कीजिए।
- डॉ. कलाम का यह ई-मेल आपके अन्य दोस्तों एवं रिस्तेदारों को ई-मेल से भेजिए।

◆